अध्यक्ष महोदय: कुंवर अखिलेश सिंह जी, कृपया अपने स्थान पर बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय: कृपया अपने स्थान पर बैठ जाइए। आप दूसरे सदस्य को बोलने नहीं दे रहे हैं। आप अध्यक्षपीठ की अनुमति के बिना बोल रहे हैं। कृपया अपने स्थान पर बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री विनय कटियार: अध्यक्ष महोदय, हम मानते हैं कि यह संवेदनशील मामला है। माननीय चन्द्रशेखर जी जब प्रधानमंत्री थे, वे यहां सदन में बैठे हैं, उस समय भी एक प्रक्रिया प्रारम्भ हुई थी, मुझे जानकारी नहीं है, लेकिन बातचीत की एक प्रक्रिया प्रारम्भ हुई थी। सब लोग चाहते हैं, समय-समय पर यह विषय सदन के अन्दर उठा है, सारे लोगों ने एक साथ बात कही है...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय: हम मामले की अच्छाईयों और बुराईयों पर चर्चा नहीं कर रहे हैं। उन्होंने तो केवल वही बात उठाई है जो माननीय प्रधान मंत्री ने कल कही थी।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय: कृपया अपने स्थान पर बैठ जाइए। आप क्या कर रहे हैं? मैंने उन्हें बोलने के लिए कहा था। राशिद अलवी जी, आप एक वरिष्ठ सदस्य हैं। मैंने उन्हें बोलने के लिए कहा था। अब मैं उन्हें बैठने के लिए कैसे कह सकता हूं?

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय: जी नहीं, मैंने उन्हें बोलने के लिए कहा था। राशिद अलवी जी, आप एक वरिष्ठ सदस्य हैं। कृपया यह बात समझें कि मैंने उन्हें बोलने के लिए आमंत्रित किया था। अब मैं ही उन्हें बोलने से कैसे रोक सकता हूं?

[हिन्दी]

श्री विनय कटियार: अध्यक्ष महोदय, प्रधान मंत्री जी ने जो भी बयान दिया है, लखनऊ में बयान दिया है...*(व्यवधान)*

माननीय प्रधान मंत्री जी ने लखनऊ में वार्ता का जो भी बयान दिया, वार्ता के माध्यम से समस्या का समाधान करने का जो बयान दिया, हम उनके बयान का स्वागत करते हैं और आशा करते हैं। *...(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय: श्री विनय कटियार के भाषण के अतिरिक्त कार्यवाही-वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाना चाहिये।

*...(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय: श्री विनय कटियर, अब कृपया अपना भाषण समाप्त करें।

[हिन्दी]

श्री विनय कटियार (फैजाबाद): सारे दलों को बातचीत के माध्यम से इस समस्या के समाधान में बात करनी चाहिए और सब को उसमें सहयोग करना चाहिए। पिछले दिनों हमने इसी समस्या को लेकर बातचीत प्रारम्भ भी की थी। लखनऊ के अंदर हमने बात प्रारम्भ की थी। समाजवादी पार्टी के लोग रोज रामजन्म भूमि और बाबरी मस्जिद के विषय को लेकर प्रदेश में दंगे कराना चाहते हैं और आज भी करा रहे हैं।...*(व्यवधान)* चाहे कानपुर, आजमगढ़ हो या कहीं भी हो। मैं कितने दंगों की सूची बनाऊं। इससे इनको कोई लाभ होने वाला नहीं है, ये सब समझ चुके हैं।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय: बहुत हो चुका।

[हिन्दी]

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी): अध्यक्ष महोदय, मुझे खेद है क्योंकि सदन में आने में थोड़ा विलम्ब हो गया। मैं एन.डी.ए. की एक बैठक में व्यस्त था। माननीय सदस्यों ने अयोध्या के मामले में जो रुचि दिखाई है उससे मुझे प्रसन्नता हुई है। मैं चाहता हूं कि यह रुचि आगे भी बनी रहे और समस्या के समाधान में सहायक हो।...*(व्यवधान)*

श्री राशिद अलवी (अमरोहा): महोदय, रुचि नहीं है, तकलीफ है।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय: यह ठीक नहीं है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: अध्यक्ष महोदय, कल मैं लखनऊ में था, वहां एक प्रैस सम्मेलन रखा गया था। महोदय, अब अगर

*कार्यवाही-वृतान्त में सम्मिलित नहीं किया गया।

यह व्यवस्था हो कि जब सदन की बैठक चल रही है तो प्रैस को सम्बोधित न किया जाए, किसी तरह की घोषणाएं न की जाएं, नीति संबंधी घोषणाएं न हों, यह बात तो मैं मानता हूं और यह बात सदन को स्वीकार भी है, लेकिन अगर किसी ने अयोध्या के बारे में प्रश्न पूछ लिया तो क्या मैं यह कहूं कि पार्लियामेंट की बैठक हो रही है, मेरे मुंह में ताला लगा हुआ है। यह मैं नहीं कह सकता और संसद यह चाहेगी भी नहीं। इस संबंध में जिस तरह के प्रतिबंध हमारे ऊपर लगाए जा रहे हैं, उसी तरह के आपके ऊपर भी लगेंगे। प्रतिपक्ष इस जिम्मेदारी से बचेगा नहीं। कल मैंने अयोध्या के बारे में क्या कहा, मुझसे यह सवाल पूछा गया। सवाल यह था कि विश्व हिन्दू परिषद् ने मार्च के महीने तक अयोध्या की समस्या के समाधान के लिए कहा है, आपकी क्या प्रतिक्रिया है। मैंने कहा कि हम चाहते हैं कि अयोध्या की समस्या मार्च के पहले हल हो जाए। इसके लिए बातचीत भी चल रही है।...*(व्यवधान)*

श्री एस. जयपाल रेड्डी: किससे बातचीत चल रही है?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: मैंने वहां जो जवाब दिया, वह मैं आपको बता रहा हूं। किन से बातचीत चल रही है, यह बताना सार्वजनिक हित में नहीं है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री एस. जयपाल रेड्डी (मिरयालगुडा): महोदय, मैं माननीय प्रधान मंत्री के भाषण में व्यवधान नहीं डालता। अनजान समूहों के साथ माननीय प्रधान मंत्री किस प्रकार चर्चा कर सकते हैं? सभा को अंधेरे में किस प्रकार रखा जा सकता है? यह राष्ट्रीय हित में कैसे हो सकता है?...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय: उन्हें अपनी बात पूरी करने दीजिए।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: अध्यक्ष महोदय, कल मुझे कितने प्रतिनिधि मंडल मिले और उनमें अलग-अलग सम्प्रदायों के प्रतिनिधि मंडल थे। मैं इसकी सारी सूची सभापटल पर रखने के लिए तैयार हूं, लेकिन अगर अयोध्या की समस्या के गंभीर समाधान में आपकी रुचि है तो आप इसका स्वागत करेंगे कि जब वार्ता चल रही है तो उसके बीच में उस वार्ता के बारे में घोषणाएं हों, यह ठीक नहीं है। हम जब उस नतीजे पर पहुंचेंगे तो सदन के सामने आएंगे और फिर आप जो भी आलोचना करेंगे, उसे स्वीकार करेंगे।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय: श्री हरीभाऊ शंकर महाले।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय: अन्य सदस्यों ने भी नोटिस दिए हैं। मैंने श्री हरीभाऊ शंकर महाले का नाम बुलाया है।

...(व्यवधान)

श्री प्रियरंजन दासमुंशी (रायगंज): अध्यक्ष महोदय...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय: पीछे बैठे सदस्यों ने भी नोटिस दिए हैं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय: मुझे अन्य सदस्यों को भी अवसर देना है। मैंने श्री हरीभाऊ शंकर महाले को बुलाया है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय: सूची में उनका नाम प्रथम स्थान पर है।

...(व्यवधान)

श्री प्रियरंजन दासमुंशी: क्या आप सूचीबद्ध सदस्यों को ही बोलने का अवसर देते हैं?...*(व्यवधान)* अध्यक्ष महोदय, मैंने नोटिस नहीं दिया है...*(व्यवधान)* जिस बात पर मैं ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं, वह अत्यधिक महत्वपूर्ण है...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय: आप उनके बाद बोल सकते हैं।

[हिन्दी]

श्री हरीभाऊ शंकर महाले (मालेगांव): अध्यक्ष महोदय, भारत रत्न बाबा साहेब अम्बेडकर के दाहिने हाथ श्री दादा साहेब गायकवाड़ तथा कर्मवीर भाऊराव कृष्णाराव गायकवाड़ 1957 में जनरल सीट से चुनकर आये थे और राज्य सभा के सदस्य भी रहे। उन्होंने बाबा साहेब से साथ यहां महाड़ में पीने के पानी के लिए सत्याग्रह किया। नासिक में राम मंदिर प्रवेश सत्याग्रह किया। महाराष्ट्र सरकार 15 अक्टूबर तक इनकी शताब्दी मनाना चाहती है। अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से संचार मंत्री महोदय से विनती करना चाहता हूं कि ये बहुत मशहूर और महत्वपूर्ण आदमी थे। अत: 15 अक्टूबर से पहले उनके नाम से एक डाक-टिकट निकाल दिया जाए—यही मेरी प्रार्थना है।